FOR P.G. Sem-3
UNIT-II CC-13

NON-COOPERATION MOVEMENT
(PART-1)

Page No.:
Date:
YOUVA

असहयोग आंदोलन (भाग-1)

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास में गाँधीजी के नेतृत्व में चले असहयोग आंदोलन (1920-22) का काफी महत्वपूर्ण स्थान है। यह आंदोलन अँग्रेजी हुकूमत के खिलाफ देशव्यापी जनसंघर्ष का प्रथम प्रयास था। इसी आंदोलन के जरिये भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन 'जन-राजनीति' एवं 'जनता को लामबंद' करने की दिशा में प्रवेश किया। सत्य, अहिंसा तथा सत्याग्रह जैसे तीन अमोघ अस्त्रों के जरिये गाँधीजी ने भारतीय राजनीतिक जीवन में प्रवेश किया तथा "अहिंसात्मक संघर्ष" की तकनीक को राष्ट्रीय स्तर पर प्रयोग किया। राष्ट्रीय आंदोलन का सामाजिक दायरा विस्तृत करने में असहयोग आंदोलन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

यद्यपि असहयोग का विचार प्राचीन है किंतु राजनीतिक संघर्ष में एक साधन के रूप में इसके प्रयोग का श्रेय गाँधीजी को जाता है। गाँधीजी से पूर्व अरविंद घोष, तिलक, पाल ने भी असहयोग को अपने विचारों में स्थान दिया था। आरम्भ में (1915-19) अंग्रेजों के सहयोगी रहे गाँधीजी कतिपय घटनाओं के कारण असहयोगी बन गये।

Feb 1919 में पारित 'रॉलेट ऐक्ट' एक ऐसी महत्वपूर्ण घटना थी जिसने भारतीय जनमानस को झकझोर दिया। इसके तहत देश में आंतरिक शांति बनाये रखने के बहाने सरकार को यह अधिकार मिल गया कि वह किसी भी व्यक्ति को न्यायालय में बिना मुकदमा चलाए बिना दोष सिद्धी के जेल में बंद कर सकती है। इसे लोगों ने 'काला-कानून' की संज्ञा दी। वास्तव में इसके जरिये अँग्रेज राष्ट्रवादियों को अपने बचाव का मौका दिये बिना ही कैद करना था। इस प्रकार यह अधिनियम जनता की साधारण स्वतंत्रता पर कुठाराघात तथा अँग्रेज सरकार की बर्बर एवं स्वेच्छाचारी नीति का स्पष्ट प्रमाण था। गाँधीजी ने सत्याग्रह के माध्यम से विरोध करने का निर्णय लिया।

इसी समय अमृतसर के जालियांवाला बाग में ब्रिटिश साम्राज्यवाद की नग्न बर्बरता का अनुभव हुआ। 13 अप्रैल 1919 को अपने जनप्रिय नेताओं डॉ सैफुद्दीन किचलु तथा डॉ सत्यपाल की गिरफ्तारी के खिलाफ एक विरोध सभा का आयोजन

Scanned with CamScanner

जलियांवाला बाग में किया गया था। 12 April को ही बिना पूरे शहर को सूचित किये सार्वजनिक सभाओं पर प्रतिबंध लगा दिया था। ऐसे में अमृतसर शहर का प्रशासन संभाल जनरल आर० डायर ने पूरे उत्साह के साथ दमन कार्य किया। इसने निहत्थी भीड़ पर गोली चलाने का आदेश दिया जिसमें हजारों जानें गई। इस घटना ने राष्ट्र की सोयी आत्मा को झकझोर डाला एवं राष्ट्रीय आंदोलन की दिशा ही बदल दी। इस घटना ने न केवल उदारवादियों के मन में अंग्रेजों के खिलाफ घृणा भर दी बल्कि रवीन्द्रनाथ ने नाइटहुड, गाँधीजी ने केसरे-हिंद की उपाधि लौटा कर तथा शंकरन नायर ने वायसराय की कौंसिल पद से इस्तीफा देकर अपना विरोध प्रकट किया। घटना की जाँच करने हेतु अक्टू 1919 में 'लार्ड हंटर' की अध्यक्षता में एक कमेटी गठित की गई।

हंटर कमेटी ने अपने रिपोर्ट (मार्च 1920) के जरिये सरकार की अत्याचारों पर पर्दा डालने की कोशिश की। जनरल डायर को नेकनीयत बताया गया सिर्फ उसके द्वारा अपनाये गये साधनों की आलोचना की। सरकार ने उसे भारत सरकार की नौकरी से अलग तो किया लेकिन उसे तलवार और 2000 पौंड की पुरस्कार राशि दी। इस घटना से गाँधीजी को धक्का लगा। अब उन्हें अंग्रेजों की न्यायप्रियता पर से विश्वास उठ गया तथा ब्रिटिश सरकार के प्रति उनके दृष्टिकोण में मूलभूत परिवर्तन आया।

प्रथम विश्वयुद्ध के समय अंग्रेजों ने भारतीयों का साथ पाने के लिए युद्धोपरांत स्वशासन का वचन दिया था फलतः आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद भारतीयों ने अंग्रेजों को युद्ध में पूर्ण सहयोग दिया। परंतु युद्धोपरांत जब अंग्रेजों ने लोकतंत्र के नये युग तथा जनता के आत्मनिर्णय जैसे वायदे को अंग्रेजों ने पूरा नहीं किया तो राष्ट्रवादियों का मोहभंग हुआ। युद्धकालीन आर्थिक भार का भार भारत-सरकार पर पड़ा। मुद्रास्फीति बढ़ गई जिसका सर्वाधिक प्रभाव मजदूरों, किसानों पर पड़ा। इसे लेकर जनता के मन में घोर असंतोष व्याप्त हो गया।

1919 का भारत सरकार अधिनियम ने जनता की आशाओं पर पानी फेर दी। इस अधिनियम के जरिये भारत में न तो उत्तरदायी शासन व्यवस्था लागू किया गया और न ही इसमें गृहशासन के नियंत्रण ढीले होने के चिन्ह मौजूद थे। इसी कारण ज्यादातर

Scanned with CamScanner

नेताओं ने इसे अपर्याप्त, असंतोषजनक एवं निराशाप्रद कहकर अस्वीकृत कर दिया।

'खिलाफत' के उद्भव ने मुसलमानों के समर्थन को इस आंदोलन के साथ जोड़ने में मदद पहुँचायी। भारतीय मुसलमान तुर्की के सुलतान को अपना धार्मिक नेता 'खलीफा' के रूप में मानते थे। महायुद्ध में तुर्की मित्र देशों के विरुद्ध लड़ा था। युद्धकाल में मुसलमानों का समर्थन प्राप्ति हेतु अंग्रेजों ने वचन दिया था कि तुर्की साम्राज्य का किसी प्रकार से विघटन नहीं किया जायेगा लेकिन युद्धोपरांत ब्रिटेन ने तुर्की साम्राज्य का विघटन करने का निश्चय किया। इससे भारतीय मुसलमान को भी ब्रिटिश सरकार की नेकनियती पर से विश्वास उठ गया। Sept. 1919 में एक खिलाफत समिति का गठन किया गया जिसने खिलाफत आंदोलन को जन्म देकर ब्रिटिश सरकार के खिलाफ असहयोग का कार्यक्रम बनाया। गाँधीजी ने मुसलमानों को राष्ट्रीय आंदोलन की मुख्यधारा से जोड़ने तथा हिन्दू-मुस्लिम एकता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से इस आंदोलन का अपना नैतिक समर्थन दिया। Nov. 1919 में दिल्ली में हुए अखिल भारतीय खिलाफत सम्मेलन की अध्यक्षता गाँधीजी ने की। उन्होंने सरकार से खलीफा के साथ न्याय करने की माँग की। इलाहाबाद में जून 1920 में केन्द्रीय खिलाफत समिति की बैठक में चार चरणों वाला असहयोग आंदोलन चलाने का फैसला किया गया। इसमें पदवियों, सिविल सेवाओं, पुलिस एवं सेना के नौकरियों का बहिष्कार एवं अंत में करों की अदायगी पर रोक का फैसला लिया गया। 1 Aug. 1920 को असहयोग आंदोलन के शुरुआत की तिथि तय की गई। गाँधीजी ने कांग्रेस पर पंजाब के अत्याचार खिलाफत संबंधी अन्याय तथा स्वराज्य के मुद्दे पर असहयोग आंदोलन छेड़ने के लिए दबाव बनाया। फलतः 1920 के नागपुर अधिवेशन में कांग्रेस ने असहयोग आंदोलन के प्रस्ताव को स्वीकार किया।

असहयोग आंदोलन कार्यक्रम के दो पहलू थे -
(a) निषेधात्मक तथा (b) रचनात्मक।

निषेधात्मक पक्ष के अन्तर्गत निम्न बातें शामिल थी :-
(i) सरकारी उपाधियों एवं अवैतनिक पदों का त्याग
(ii) स्थानीय संस्थानों के मनोनीत सदस्यों द्वारा अपने स्थानों से त्याग
(iii) सरकारी उत्सवों, दरबारों तथा सरकारी अफसरों द्वारा उनके

Scanned with CamScanner

सम्मान में किये गये उत्सवों का बहिष्कार
(iv) सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त अथवा सरकार के अधीन स्कूलों और कॉलेजों का बहिष्कार करना
(v) सरकारी अदालतों का बहिष्कार करना
(vi) सैनिकों एवं श्रमिकों द्वारा मेसोपोटामिया के लिए भर्ती से मनाही
(vii) विधानसभा के चुनावों का बहिष्कार
(viii) विदेशी समानों का बहिष्कार
(ix) जरूरत पड़ने पर सविनय अवज्ञा जिसमें कर ना अदायगी भी शामिल।

असहयोग आंदोलन के रचनात्मक कार्यक्रम में निम्न बातें सम्मिलित थी:-
(i) राष्ट्रीय शिक्षण संस्थान का निर्माण
(ii) आपसी झगड़ों के लिए पंचायती अदालतों की स्थापना करना
(iii) अस्पृश्यता का अंत करना।
(iv) हिन्दू-मुस्लिम एकता पर जोर देना
(v) तिलक कोष के लिए 1 करोड़ की राशि एकत्र करना
(vi) चरखा एवं कताई-बुनाई को लोकप्रिय बनाना
(vii) स्वदेशी को प्रोत्साहन देना।

असहयोग आंदोलन मुख्यतः चार चरणों से होकर गुजरा। ये चरण निम्नलिखित है:-

(A) प्रथम चरण (जनवरी 1921 से मार्च 1921):- आंदोलन के इस चरण में गाँधीजी ने खिलाफत नेता अली बंधुओं के साथ राष्ट्रव्यापी जनसम्पर्क अभियान चलाया और इस बात पर बल दिया कि विद्यार्थी सरकारी नियंत्रण वाले विद्यालयों एवं महाविद्यालयों को तथा वकील अदालतों का त्याग करें।
(ii) विद्यार्थियों, बुद्धिजीवियों से चरखा कार्यक्रम अपनाने की अपील की गयी
(iii) शैक्षणिक बहिष्कार का आह्वान सर्वाधिक सफल रहा विशेषकर बंगाल में। C.R. Das तथा सुभाषचन्द्र बोस ने इसे काफी प्रोत्साहित किया। दूसरा स्थान पंजाब का था जिसे लाला लाजपत राय ने प्रोत्साहन दिया। बम्बई, उ.प्र., बिहार, उड़ीसा असम में भी इस कार्यक्रम पर अमल हुआ परंतु मद्रास में इसे सफलता नहीं मिली।

[TO BE CONTINUED]

Scanned with CamScanner